छाया

धर्मेन्द्र अहिरवार

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग
भोपाल के सहयोग से

छाया

(कविता-संग्रह)

धर्मेन्द्र अहिरवार

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 98290-18087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण : जून, 2018

ISBN :

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

CHHAYA (POETRY) by Dharmendra Ahirwar

कविता, कला और जीवन के गुरु
हेमंत दादा, सौरभ सर
और
सुदीप सोहनी सर
के लिए

अनुक्रम

अपनी ओर से

मुझे जीवन सबसे ज़्यादा सुखद तब लगता है जब वह न सम्पूर्ण यथार्थ होता है न सम्पूर्ण कल्पना यानि यथार्थ और कल्पना के बीच कहीं। कविता सही मायने में उस तीसरे धरातल तक ले जाती है। कविता के संसार में जीना, जीवन में होना लगता है।

'छाया' के लिखे जाने में, जीने से ज़्यादा जीवन के सभी मायनों को जानने की कोशिश रही है।

एक सवाल जो हमेशा मेरे भीतर होता है कि 'मेरा होना कितना ज़रूरी है ?' को मैं हर लिखे में खोजता हूँ। मिल जाने के बाद भी मैं इसे निरंतर खोजता रहता हूँ। क्योंकि मिला हुआ हर उत्तर सच की छाया है। और सत्य अंत के अलावा कुछ और हो सकता है यह अब तक तो नहीं जानता।

मैं अक्सर खुद को यथार्थ और कल्पना के बीच कहीं पाता हूँ। लोगों से मिलने पर महसूस होता है कि कुछ मुझे सम्पूर्ण यथार्थ मानते हैं और कुछ सम्पूर्ण कल्पना। पर मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा आता है जब कोई मुझे इन दोनों के बीच जाने। जैसे संसार में छाया का होना, जो होने का आभास दिलाती है और होती भी नहीं है।

यह संग्रह मेरे लिए छाया है। जीवन का तीसरा धरातल है और खोजे जाने की शुरुआत है।

–धर्मेन्द्र अहिरवार

नदी

उदासी में
नदी का होना माँ का होना सा है

कई उदास चेहरे हर रोज़
नदी किनारे आकर बैठते हैं
बैठने से उठने तक के समय में
नदी
बहा ले जाती है उदासी
और छोड़ आती है
समंदर पार

नदी खुद की हानि होना नहीं जानती
'विनिमय' जानती है
वह सब कुछ ले लेती है
और मुस्कुराहटें लौटाना नहीं भूलती

हम शायद कभी नहीं समझेंगे ...!
नदी का ठहर जाना
उदासी का ठहर जाना है
और नदी का बहना
मुस्कुराहटों का बहना है।

परिंदे

एक बेघर के लिए हर रोज़
मैं अपना घर खाली छोड़ जाऊँगा
शाम को घर से निकलूंगा
और जब भी लौटूंगा
सुबह में ढलकर आऊँगा

वक़्त-बेवक्त आते हैं अपने घर
मैं ऐसे लोगों में मिल जाऊँगा
परिंदे जो नहीं लौटते अपने घर
मैं परिंदा बनकर उनके घर जाऊँगा
उनके परिवार से अपने परिवार की तरह मिलूंगा
और फिर अगली मुलाक़ात के लिए
उड़ जाऊँगा

मैं अपनी ही दुनिया में
एक बेढंगी सी-ही सही
पर अपनी दुनिया बनाऊँगा
जहाँ जब चाहे आवारों सा आऊँगा
बंजारों सा जाऊँगा।

जीवन

मैं एक खेल खेलना शुरू करता हूँ
कुछ समय बाद मुझे मालूम होता है
कि मैं
अब उस खेल में फंस गया हूँ
मैं हँसता हूँ
रोता हूँ
चीखता चिल्लाता हूँ
अंतत: जीत जाता हूँ
और निकल भागता हूँ इस खेल से

फिर मैं एक दिन
नया खेल शुरू करता हूँ।

और अचानक कभी

मेरे कमरे में, एक खूँटी है
जिस पर टंगे हैं– मेरे सपने।

हर रोज़ मैं नींद से जब भी जागता हूँ
खूँटी से
उतार लेता हूँ एक सपना
और दिन भर
बीतता हूँ उसके संग

कभी कभी मेरा सपना
मेरा साथी बनकर मेरे साथ चलने लगता है
और कभी कभी
नाराज़ हो दूर खड़ा हो जाता है

इस लुका छिपी में
मैं थोड़ा थोड़ा खुद को खर्च करता हूँ
और अचानक कभी
मैं खुद, अपना सपना हो जाता हूँ।

इस्तीफ़ा

आज जब मैं अपने ऑफिस गया
वहाँ मैंने देखा
सारे कर्मचारी पक्षी हो गये हैं
पर सबके पंख गायब थे
सबकी उड़ान बाक़ी थी
वे अपने ख़्वाबों की कुर्सी पर बैठे
घड़ी के कांटे हो गये थे
जो टिक टिक तो कर रहे थे
पर सिर्फ़, गुज़र रहे थे

मैंने अपने मालिक से कहा
मुझे मेरे पंख लौटा दीजिए
मैं अपनी उड़ान पूरी करना चाहता हूँ

मुझे पंख वापस नहीं मिले
एक दिन गुस्से में
मैंने उन्हें अपना इस्तीफ़ा थमा दिया
और मेरे पंख उगना शुरू हो गए।

किताब

किताब मेरा घर है जिसके एक कोने में
जब कभी थक जाता हूँ
सो जाता हूँ मैं

दूसरे कोने में
सारे शब्द इकट्ठे हो जाते हैं तब
वे मेरी थकान को समझते हैं
इसलिए खाली कर देता हैं
मेरा कोना–मेरा कमरा

किताब के भीतर शब्द चलते फिरते इंसान हैं
उनमें एक शब्द मेरी प्रेमिका है
और एक शब्द मैं

अक्सर एक शब्द ‘प्रेम’
हम दोनों के बीच पड़ा रहता है।

बेघर

आज शाम जब मैं अपने घर लौटा
तब 'शब्द'
चारों और बिखरे पड़े थे
कुछ मेरे बिस्तर पर
कुछ तकिए तले
और कुछ खूँटी पर टंगे हुए थे।

मेरे कपड़ों के खीसों में भी दुबके थे
शब्द

किताब ने उनसे अपना कमरा
खाली करवा लिया था
सुनने में आया है
उन पन्नों पर अब से अमीर शब्द रहेंगे
वे विदेश से आये हैं।

दुकान

बचपन में
एक बार मैंने माँ से कहा था
कि टिफिन में
किसी दिन दाल रोटी की जगह
सपने रख देना

उन दिनों मेरे स्कूल के रास्ते में
एक सपनों की दुकान थी
मैं कभी वहाँ नहीं गया
मुझे लगता था की सपने बड़े महंगे मिलते होंगे

इसलिए बचपन के दिनों में
अपने सपनों को मारकर
एक गुल्लक में
इकट्ठे करते रहा सिक्के

आज लदी हैं जेबें सिक्कों से
जी चाहे तो दुकाने मोल लूं
पर पूरी दुनिया में कहीं
बचपन वाली
वह छोटी सी
सपनों वाली दुकान नहीं।

बटुआ

वह जब भी अपने खीसे से
बटुआ निकालता है
यादें निकाल लेता है

यादें तस्वीर में नहीं होती कभी
वह छिपी होती हैं
हमारे भीतर ही कहीं, पहले से

बटुए का खुलना
हमारी यादों का उजागर हो जाना है
हमसे।

जब खुलता है तब चलता है
जीता है
और फिर पड़ा रहता है
किसी कोने में
'जीवन', एक राही की जेब में रखा बटुआ है।

मेरा कमरा बोल पड़ा

वह हमेशा खुला रखना चाहता है दरवाज़ा
और दीवारों को
गिरा देना चाहता है

असहनीय हो रहा है सिर के ऊपर भार
वह छत को फूँक मारकर
उड़ा देना चाहता है
लेकिन फिर भी
बना रहना चाहता है एक कमरा

ताकि कभी भी कोई आ सके
कभी भी कोई जा सके
बेहिचक

अब वह आसमान में तब्दील होना चाहता है
एक दिन
मेरा कमरा बोल पड़ा।

चलो की अब चला जाए

चलो की अब चला जाए
पहाड़ की ऊँची चोटी पर
और अपनी खुशी के लिए
जोर से चिल्लाया जाए

अपने अकेले कमरे में
कंबल के भीतर छुपकर
खूब रोया जाए
और कर ली जाएँ तमाम हसरतें पूरी
कि हमारे भीतर कुछ भी
शेष न रह जाए

अगर कुछ बचे–कुछ भी
प्यार, नफरत, दोस्ती
तो क्यों न बाँट लिया जाए
और खर्च किया जाए

अगर शेष बची है
खुलकर जीने की इच्छाह
तो क्यों न ?
परिंदे में तब्दील हुआ जाए
चलो की अब चला जाए।

बंजारे का बसेरा

मैं शहर में
जब भी किसी गली या मकान के
सामने से गुज़रता हूँ
हर दरवाज़ा बंद पाता हूँ
तब मैं एक सपना बुनता हूँ
की शहर में अपना एक घर बनाऊँगा
और उसके दरवाज़े
हमेशा खुले रखूँगा

ताकि घर के हिस्से की हवा
घर के हिस्से की धूप
और घर के हिस्से का शोर घर जा सके
गली में खेलते बच्चों की आवाज़
घर आ सके

घर के हिस्से का अकेलापन
बाहर जा सके
और मिल सके नए लोगों से

मैं घर के दरवाज़े खुले रखूँगा
ताकि जब थक जाए बंजारा
तो घर आ सके।

वसीयत

मेरे दफ्तर में
एक दिन, आदमी की शक्ल में
घर आया

उसने कहा–
मैं दुनिया के तमाम मकानों की तरफ से
आपसे दरख़ास्त करता हूँ
कि रूपये पर जैसे लिखा होता है
''मैं धारक को ... रुपये अदा करने का वचन देता हूँ''
वैसे ही हमारी वसीयत भी लिख दीजिए

साहब, मैं अब और बेघरों को
मरते नहीं देख सकता

लिखिए साहब, ''कि घर तो बस घर है
वह मेरा या तुम्हारा नहीं होता
वह उसका होता है जो उसमें रहता है।''

खिलौना

खुशी उस वृद्ध के चेहरे पर कभी नहीं आती
वह नन्ही प्यारी मुनिया सी डोलती
आगे–पीछे, दाएं–बाएँ

कभी ऊँगली पकड़ कर साथ चलने लगती
कभी गोद में उठाने की ज़िद करने लगती
और कभी कभी
रो पड़ती
उसे उसका खिलौना नहीं मिला

हर शाम मुनिया की दादी के साथ
वह पूजा पाठ करती
कभी बारिश बन वृद्ध के चेहरे पर बरस पड़ती
अब खेतों में भी उगने लगी थी

वृद्ध जो ढोता आ रहा है उदासीनता का भाव
खुशी को नहीं जानता
पर खुशी उसकी उदासीनता से चिढ़ने लगी थी
वह यह कैसे बर्दाश्त कर पाती ?
की वृद्ध उदासीनता का खिलौना है।

कहाँ पहुचेंगे ?

हम कोई किताब उठाते हैं और पलटते पन्नों के साथ
बीतते जाते हैं
अहसास से परे थोड़ा बदल जाते हैं
किताब का हमसे होकर गुजरना, हमारा अहसास है
चुनाव जो हम करते हैं
दरअसल, वह हमारा नहीं होता
वह किसी और के द्वारा हमें चुना जाना होता है
इस व्यापार के षड्यंत्र का रचनाकार वक़्त हमेशा
चुप्पी में छिपा होता है
वह गुज़रने की कला जानता है
हम मोहरे हैं जो जीवन में खुद को तरह तरह से
बेचने की तलाश करते हैं
और अंततः दुनिया की तमाम दुकानें बंद पाकर
स्वप्न में, पलकों को बंद कर सो जाते हैं
गुमनाम।

पहर

शाम लगती नहीं की वह शाम है
ज़िंदगी की थकान से दूर जब बैठता हूँ किनारे
तब अपने अकेलेपन में
मेरी सहेली होती है शाम

मैंने कभी उसे शाम सा नहीं देखा
पर तुम हमेशा
शाम सी नज़र आती हो

तुम्हारा रूठना शाम का रूठ जाना है
और मैं अक्सर
शाम के रूठने का इंतज़ार करता हूँ

मैं फ़िराक में रहता हूँ
कि उस वक़्त
मैं समुद्र की तलहटी में डूब जाऊँ
और वह जो पानी की दीवारों वाला घर है
वहीं बैठे बैठे
दिन डूबने का इंतज़ार करूँ।

स्त्री

एक कहानी है जो रोज़ बनती है

जब वह घर से निकलती है
और फुटपाथ पर चलती है
थोड़ी सी कुछ
ज़िंदगी सी गुजरती है

कुछ आँखों में बस्ती है
घटती है
मिटती है ...!

फिर हस्ती है या रोती है
और शाम को ढोती भी है

अक्सर सुनने में आता है
वह
एक कहानी है जो रोज़ बदलती है।

मैं बरसात के रास्ते आऊँगा

समुद्र
तुम पुकारो तो मुझे!

फिर चाहे तुम्हारे चारों ओर खड़ी हों
असंख्य दीवारें, अनगिनत अड़चने

और मेरे पाँव
ठिठुर कर, स्थिर हो गये हों
तुम तक जाने वाले तमाम रास्ते
भले बदल चुकें हो
अपनी दिशा

समुद्र
तुम पुकारों तो मुझे
मैं बरसात के रास्ते आऊँगा

समुद्र मेरा तनिक अंश भी अगर सूरज सोख ले
तो बादल पर मुझे अधिकार देना।

मेरे इंतज़ार
तुम पुकारो तो मुझे
फिर चाहे, मेरे कान सुनना बंद कर दे

मुझे कुछ दिखाई न दे
और भले मेरी आवाज़
मौन में बदल जाए

मेरी परछाईं
तुम पुकारों तो मुझे
मैं बरसात के रास्ते आऊँगा।

शाम का सपना

पानी का छोर दिख नहीं रहा
तो मान लिया जाए
कि मैं समुद्र को देख रहा हूँ तालाब में

अगर मैं समुद्र पर पैर रखकर खड़ा हो जाऊँ
तो ज़ाहिर है कि सूरज को नीचे से छू लूँगा
शायद, वह मेरी हथेली पर आ जाए

अभी अभी जो नाव गुजरी है
उसने ठहराव को झुठला दिया है
समुद्र के
जो अब मेरी धरती है

फिर भी, बेहिचक खड़ा रहूँगा
धरती पर
इस तरह दो पहचान एक में तब्दील हो जाएँगी

शाम का ओझल होना अच्छा लगता है
सपने का नहीं
फिर भी मैं सूरज को ढलते देखता हूँ।

स्मृति में चित्र

मैंने अपनी किताबों के बीच
कैनवास छुपा कर रखा है
अपनी स्मृति में एक चित्र
हर रोज़ देखता हूँ

बाज़ार से ब्रश खरीदने की इच्छा
रंगों के चुनाव की चिंता
अपने हाथों को रंगीन
रंगों का पानी में घुल जाने का
स्वप्न देखता हूँ

मेरे पूरे कमरे में खिल जाते हैं रंग
फूलों से
महक जाते हैं रंग
बिखर जाते हैं रंग

एक पल को
रंगों को पहनता हूँ, रंगों को ओढ़ता हूँ
रंगों में समा जाता हूँ, रंगों सा उछरता हूँ
तब मैं
कैनवास पर एक कहानी देखता हूँ

तेरी, मेरी और कैनवास की।

दुनिया सिमट रही है

देश
अब एक कमरे में सिमटा है
दुनिया
'एंड्राइड' हो गई है
समूचे पुरुष उसमें
दुनिया की सभी स्त्रियाँ एक लड़की हो गई है

कमरे में बैठा व्यक्ति
जो खुद को होशियार और ज़िम्मेदार समझता है
कहता है
देखो, मेरे कमरे की उम्र जो है
वह ढल रही है

उसे तकाज़ा नहीं बुढ़ापे का
उसी की तो उम्र है
जो धीरे धीरे चल रही है

यह वह उम्र है
जब फैलता है आदमी
ना जाने क्यों? अब उसकी!
दुनिया सिमट रही है।

मैं रास्ते में हूँ

मिलो मुझे
बरसात यह कहकर चली गई

बौछार ने कुछ कुछ
खिड़की से झाँका
और भिगोकर चली गई

अपने ह्दय में लिए उसे
मैं बचता रहा
वह बूंदें, राह दिखाकर चली गईं

चल पड़ा मैं राही
वह हमराही
प्रेम दिखाकर चली गई

गरज गरज और बरस बरस अब बादल
सात समुन्दर पार चला
लहरों से जा टकराया
और
लहरों के ही साथ चला।

क़िरदार

टिक टिक टिक टिक बीता में
आधा मैं
आधा तेरी याद में

रात अँधेरी बन बहा में
जुगनू मैं–जज़्बात में

मैं एक कहानी चुप्पी की
थोड़ी सी आवाज़ में

थोड़ी सी आवाज़ मैं।

तीसरी आँख

मैंने अपने मन पर काबू पा लिया है
जैसे कुछ पाया ही नहीं
'संग'– जो रिश्ता था, खो गया कहीं

अब वह जैसे घंटों बैठी होती है
सामने मेरे
गुमनाम, कुछ बोली ही नहीं

दीवार में तब्दील हो जाएँ पलकें
तो दुश्मन सी लगती है
असल में आँखें जो हैं वह दुश्मन हैं मेरी।

मुझे चाँद चाहिए

मुझे चाँद चाहिए
इसलिए नहीं की उसके पीछे छिपा अंधकार
उजागर हो सके
बल्कि इसलिए– कि वे किस्से,
वे कहानियाँ, वे कविताएँ
उजागर हो सकें
जो चाँद के पीछे ढके अँधेरे में छिपी हैं

उजागर हो सकें
चाँद पर लिखने वाले कवि, कहानीकारों के भीतर
बहुत सारे तारे

और अँधेरे में जीवन की एक नई संभावना
तलाशे जाने की आत्मशक्ति
हो सके जीवित
हाँ, सिर्फ़ इसीलिए, मुझे चाँद चाहिए...!

मैं चाँद को
किसी स्त्री के जूड़े में नहीं सजाना चाहता

बल्कि बस्ते में रखकर
बहा देना चाहता हूँ नदी में

ताकि वर्षों से अँधेरे में रह रहीं मछलियों को
प्रकाश मिल सके

चाँद को एक नई दुनिया मिल सके
अँधेरे को अँधेरा मिल सके
और तारों को अपनी पहचान मिल सके।

आंधियाँ

एक अन्य युवक जान गया
कि हमारे बीच एक धागा है रिश्ता नहीं,
पुल है बस

उसने षड़यंत्र रचा की धागे को तोड़ सके
वह मेरी सबसे सुन्दर चिड़िया को
बांधकर ले जाना चाहता है

वह अपने मनोयोग से आंधी बना
धागा टूट तो गया
पर वह अब भी हमारे बीच है

उसने मुझसे पूछा-
की जो आँधी अफ्वाह बनकर आई है
क्या वह सच है?
मैंने कह दिया- नहीं!

अब कभी कोई आँधी
अफ़वाह बनकर नहीं लौटेगी
ना कभी कोई जान पाएगा
आँधियों का सच।

बात बराबर

एक दिन मेरी ज़िंदगी और मैं
खेल खेलने लग गए

उसने मेरा इंतज़ार मुझसे छीना
फिर लौटा दिया
कहने लगी– मज़ाक कर रही हूँ

एक दिन मेरे अकेलेपन को ले भागी
फिर लौटा दिया
कहने लगी– मज़ाक कर रही हूँ

जब उसने मुझसे पूछा– क्या तुम मेरे प्रेमी हो ?
मैंने कहा– नहीं !
और वापस अपने धुंधलके में आ बैठा
कह आया था उसे
अब नहीं लौटूंगा कभी

उसके लिए एक सन्देश छोड़ा है मैंने
लिखा है
मैं मज़ाक कर रहा हूँ।

दीवार के पीछे

एक हद के बाहर
मैं उसे समझ नहीं आता
और एक सीमा के अन्दर वह मुझे

दो दुनियाओं की एक कहानी है
कि वे साथ चलती हैं निरंतर

मेरे दोनों जीवनों में
रूपों का पक्षांतरण हो गया है
पर तू व्यवस्थित है
वहीं के वहीं

मैं नियति बदलने की फ़िराक में
खुद से विद्रोह कर बैठा हूँ

रिश्तों का सहारा मुझे ताकत नहीं देता
मेरे अकेलेपन में
तू घुल जाना कहीं

यह उम्र जंग सी लगती है
बेहतर है
जीता जाना नहीं।

होता है आभास

एक पूरी रात जागा था याद है?
तब सिर्फ़ तुम्हीं ने मुझसे बातें की थी
मैं उस रात का कर्ज़दार हूँ

मुझे चोट लगी थी
तब तुम्ही ने मेरे घावों की परवाह की थी
मैं उस घाव का कर्ज़दार हूँ

तुमने पहली बार मेरे कंधे पर हाथ रखा था
याद है?
मेरी चिंता जानने के लिए
मैं उस स्पर्श का कर्ज़दार हूँ

मैं अपनी माँ का कर्ज़दार नहीं हूँ
ना ही पिता का
मैं एक भार का कर्ज़दार हूँ
हक़ है मेरा तेरा प्रेम
तेरे प्रेम का कर्ज़दार तो नहीं हूँ

और अपनी पृथ्वी को कन्धों पर उठाने का भार भी
मैंने अब तक नहीं लिया है
मैं अपने कर्तव्य का गुनेहगार तो नहीं हूँ।

पहाड़

मैं सोचता हूँ की जब भी पहाड़ लिखूँगा
कुछ नहीं लिखूँगा
न लिखे जाने में छिपी है उसकी विशालता

जैसे कोरा काग़ज़
समेटे होता है अपने भीतर
हजारों किस्से
अनगिनत कहानियाँ
पर जब भी कोई कहानी उजागर होती है उस पर
वह सिमटकर सिर्फ़ एक हो जाती है

सिर्फ़ एक होना विशालता नहीं है
एक में अनंत होने का आभास
पहाड़ होना है

मैं कभी हिमालय नहीं होना चाहता
एक ऐसा पहाड़ होना चाहता हूँ
जहाँ कोई इंची टेप लेकर नहीं गया
और उस छोटी सी ऊँचाई में विशालता को जीना चाहता हूँ

ऊँचाई कभी पहाड़ों में नहीं होती
वह हमारे भीतर छिपी होती है
और उसका हमसे उजागर हो जाना
हमारा पहाड़ हो जाना है।

गूंजती आवाज़

तेरी ख़ामोशी और मेरी बैचेनी
पक्के दोस्त हैं

सरहदें कभी कभी बेरहम होती हैं
जब वे तारों के परे
हमारे भीतर कहीं से बुनी जाती हैं

तू जो है वह
सरहद पार की कविता है
मैं सरहद पार का पंछी
जो अपने पंखों के चबूतरों पर बैठा
ताकता है तुझे।

गिनती

एक दिन जब मैं कविता लिखने बैठा
तो सोचा
शुरू से शुरू करता हूँ
जैसे गिनती
एक से शुरू होती है और सौ पर खत्म

पर मुझे कविता का 'एक' मालूम न था
मैंने तमाम लोगों को खोजा
अनगिनत किताबें पड़ी
पर कविता का 'एक' हाथ न लगा
और शुरू से शुरू करने कि तलाश
कभी खत्म न हो सकी

मैं चाहता था कि कविता को
गिनती की तरह पड़ा जाए
ताकि जीवन 'एक' से शुरू होकर 'सौ' पर खत्म न हो

जीवन कहीं से भी शुरू किया जाए
कहीं भी खत्म कर दिया जाए
और तमाम गणनाओं को नेश्तानाबूत कर दिया जाए
ताकि जीवन में जीवन शेष रहे
गिनती में न ढल जाए।

अंत से उपजा प्रेम

सबसे त्रासद होता है
अपने ख़यालों में झूठ बोला जाना
और
अपने ख़यालों से झूट बोला जाना
कि वे
तुम्हारे ख़याल नहीं हैं।

पहली मुलाक़ात

याद है हम एक दिन भूल भुलैया में घूमे थे
मैं खुद को वहीं छोड़ आया था
तेरे साथ

तूने ही तो लुका छिपी शुरू की थी
मैं तुझे खोज रहा था

तू जानती थी कि मैं अजनबी हूँ
बाहर निकलने का रास्ता नहीं जानता
मैं चुप था
और तू मेरी देह को साथ लेकर वापस लौट आई।

मन के भीतर

कल वह मेरे सामने बैठी रही
मैं भी उसे ताकता रहा
वह रेलगाड़ी में बैठ दूर जाती रही
मैं उसके और करीब आता गया

मेरे अल्फ़ाज़ जो हैं वह उसके हैं
वह चुप थी
क़लम भी ठहरी रही
लगा ज्यों बैठी हो वह सामने
कुछ बोली ही नहीं
मेरी कॉपी का पन्ना खाली पड़ा रहा

अब की कोई पूछता है मेरी ख़ामोशी का राज़
मैं उसके सामने खाली पन्ना रखता हूँ

अब मैं कोरे पन्नों पर
अपनी प्रेम कहानी लिए फिरता हूँ
और महसूस करता हूँ तेरा मेरा लिखा जाना
कहीं भी जब जज़्बात लिखता हूँ।

सरहद

हम सरहद ही तो है
क्योंकि हमारे भीतर भी तो एक दुनिया है

तो क्या हमारा होना ग़लत है?
या फिर सरहद का होना
सही

हम अपने बाहर और भीतर से
ऐसे ही जूझते हैं
जैसे दो देश, दो दुश्मन

तब तो गड़ी रहनी चाहिए–बागड़ें
और दीवारों को पनपने देना चाहिए
झगड़े की बात को
फिर उत्सव की तरह देखना चाहिए

अगर नहीं!
तो सारी सरहदों को पगडंडी में तब्दील किया जाना चाहिए
ताकि राहगीर को रास्ता मिल सके।

भविष्यवाणी

मैं कई दिनों तक तलाशता रहा
पर श्वेत तितली नहीं मिली।

फिर सोचता हूँ जिस तितली को
मैंने उड़ते नहीं देखा
कहानियों में भी जिसका ज़िक्र नहीं सुना
वह कैसे मेरे नाम ख़त छोड़ गई?

ख़त में लिखा है
'तुम्हारी प्रेमिका मैं हूँ!'
बचपन के दिनों में तुम घुटनों के बल रेंगते थे
और मेरा पीछा करते थे
तब तुम्हें रंगों की समझ नहीं थी

काश! ...कि मैं अब भी
प्रेम के रंग समझ पाता।

क़ैद

मैंने तेरी यादों को धागे से बाँध लिया है
और लौट आया हूँ
आदिमानव के युग में
जब काटने वाली कोई भी चीज़ ना थी

अब एक उम्र लगेगी पत्थर तलाशने में
कि काट सकूँ धागा

मेरे हिस्से एक ही उम्र आई है
तो बेहतर है तलाशूँ
अपनी रूह की उन्मुक्तता।

अचार

इस बार दो बरनी भरकर बनाऊँगा

एक में प्रेम कविताएँ भरूँगा
और दूसरे में जीवन की अन्य तमाम कविताएँ

जिन कवियों ने प्रेम के अलावा
कभी कुछ और नहीं चखा
उन्हें दूसरी बरनी से खूब अचार खिलाऊँगा
ताकि वे जान सकें
कि कविताओं कि दुनिया बहुत बड़ी है
और वह कई रंगों में ढली है

जो मुझसे पूछते हैं
बेस्वाद क्या है?
उन्हें एक एक कलि प्रेम कविता खिलाऊँगा

अब कविता की बात
तो वह एक कैनवास है

जो तरह तरह से
कई रंगों में, –कई ढंगों में
रंगा जाता है

तो कवियों से अनुरोध है
जब भी नए सीजन का अचार डालें
थोड़ा ही सही
वेरायटी में बना लें
धन्यवाद।

प्रेमियों का संसार है समुद्र

कभी कभी मन करता है तेरा हाथ पकड़ूँ
और ले भागूँ
किसी पहाड़ पर

या फिर, किसी तेज़ धार वाली नदी में
पैर लटका के बैठें किसी पत्थर पर

कितना अच्छा हो पानी के बहाव के साथ
हम घुलना शुरू हो जाएँ
थोड़े थोड़े

हम बहते जाएँ और समुद्र की तह में पहुँच जाएँ
वहाँ जहाँ बस
मछलियों की मुस्कराहट है

स्मृति के रूप में
रह जाएँगी हमारी परछाईयां पत्थर पर
और नदी रास्ता होगी
फिर भी कोई हमें ढूँढ नहीं पाएगा
हम मछली हो जायेंगे

तुझे नहीं पता समुद्र के संसार का राज़
हर मछली और पत्थर की अपनी एक कहानी है
मछली हो जाने की एक कहानी है।

शून्य की तलाश

जब आसमान को बांटा जाए
तो बादल का एक टुकड़ा
मेरे नाम कर देना

मैं अपने मौन को तलाशना चाहता हूँ
संसार के कोने कोने में

जब बादल के टुकड़े से बने
खालीपन में
छिपकर बैठा होगा मौन

ज़िंदगी जो अब तक कुछ नहीं थी
तलाश है
अब अपने मौन की।

छाया

पेंसिल से खींची, एक लकीर
बढ़ते बढ़ते बृहद हो गई
वह दुनिया की
सबसे बड़ी लकीर मान ली गई
समुद्र और धरती
फिर, एक न हो सके

पहली बार मैंने
भूगोल का मानचित्र बनाया था
रबर घिसते घिसते ड्राइंग शीट हो गई
अफ़सोस,

रंग फैलते फैलते
तब्दील हो गए दुनिया में
नीले रंग ने
हठ नहीं छोड़ा
तब से आकाश नीला है

समुद्र के आकाश हो जाने की कल्पना साकार हो गई
वह लकीर मिट न सकी।

दोस्त

एक मीठे सुर वाली चिड़िया
मुझसे बात करने लगी
वह बोली नहीं पर उसने कहा था एक दिन–साथी

वह कभी मेरे कंधे पर हाथ रखती
और कभी कभी
मेरा हाथ पकड़कर आसमान में ले जाती
उसे मेरी फ़िक्र है

मुझे उसकी चुप्पी नहीं भाती
पर उसका गीत
लुका छुपी क खेल है

एक दिन सपने में उसने कहा–
'मैं उड़ जाऊँगी ऐसी की वापस नहीं आऊँगी'

वह मुझसे मेरा सपना पूछती है
मैंने नहीं बताया
दो ही तो खजाने हैं मेरी दोस्त,
मेरा सपना।
डर है
कहीं वह मेरा सपना ले उड़ी तो
कहाँ ढूँढूँगा उसे ?

प्रेम

उसने अपने दोनों हाथ
तख़्त पर पटकना शुरू कर दिए
और संगीत बज उठा

जब उसकी मदहोशी टूटी
उसे ज्ञात हुआ
कि उसके दोनों हाथ धूल में सन गए हैं
दाँत पीसते हुए
उसने अपने दोनों हाथ फ्रॉक से पोंछ लिए

हाथों में बचे हुए अंश को चूमा गया
अनेकों बार
फिर सुगन्धित सामान में तब्दील हो गई धूल

प्रेम में अलगाव कुछ नहीं होता
धूल से पूछो।

सिक्के का पहलू दो

आवाज़ नहीं आई
सिक्का ज़मीन से आ टकराया
वह मेरे और सिक्के के जीवन का
पहलू एक था
हम दोनों का ही घर एक था
माटी का– चूल्हा, घड़ा, तवा
दीवार एक थी
सबका एक बिछौना माटी का
और माटी का ही था आसमान

मैं अब सिक्का नहीं उछालता
वह बचपन की बातें थीं

फिर फिर आया क्रंदन आज
टन्न की आवाज़ आई
मुझको सिक्के की चुप्पी भाती थी
आवाज़ टन्न की रास न आई
क्या बदला है?
कुछ भी तो नहीं!

हाँ शायद बदली है दीवार
घर का साजो सामान बदला है

चूल्हा, तवा, बिछौना बदला है
थोड़ा बहुत तो बदला है– आसमान

सिक्का वही है
जीवन वही है
बस, सिक्के का पहलू बदला है।

वादा

मेरी ज़िंदगी वह पन्ना है
जिस पर अक्षर अक्षर तू बिछी है

जब मुझ पर प्रकाश पड़ेगा
तू गहराती जाएगी
और वे तुझे
साथ ले जायेंगे
मेरे हिस्से आएगा अकेलापन

मैं हठी तो बहुत हूँ... बहुत!
तलाशता रहूँगा ऐसी कलम जिससे बहकर तू निकले
उस वक़्त समा जाना मुझमें
बेहिचक

हो सकता है
मैं किताब से अलग कर दिया जाऊँ
या फाड़कर ही फेंक दिया जाऊँ।

वह दूर आसमान में जो सूरज है
तेरा प्रेमी है
मैं उससे जलता हूँ

वह सोख लेगा तुझे
मैं धीरे धीरे मुरझाता रहूँगा
और ताकता रहूँगा तुझे
बेहिसाब

और करता रहूँगा इंतज़ार
तेरे लौट आने का।

आदमी

ज़िंदगी का सबसे बड़ा नाटक है
खुद को भरा जाना
जो चलता रहेगा अनवरत

मैं खुद को खाली करना चाहता हूँ
फिर भर देना चाहता हूँ
दोहराना चाहता हूँ इस प्रक्रिया को अनेकों बार

ताकि बचा रहे
थोड़ा सा खालीपन
और मैं रहूँ
आधा–अधूरा।

ख़्वाब

एक भविष्य वक्ता ने कहा–
अगर उसने तुम्हें पढ़ लिया पूरा
तो तुम्हारी आत्मा उसकी देह में उतर जाएगी
और तुम एक हो सकोगे

मैंने खुद को एक कविता में उतार लिया
पूरा का पूरा

उसने मुझे पड़ना शुरू किया
किसी अनजान अड़चन की वज़ह से वह उठ गई
अंतिम पंक्ति पड़े बिना

तब से अब तक
मैं एक पंक्ति में कैद हूँ
ख़ामोश

उसे मेरी फ़िक्र है
और मुझे सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी का इंतज़ार।

प्रेम कहानी

एक दिन उसने मुझसे पूछा–
'तुम्हारी प्रेमिका कौन है?'

अब मैं
वक़्त हूँ
बीतता जाता हूँ चुपचाप।

बचपन होता है प्रेम

ईश्वर ज्ञात हो तब वह ईश्वर नहीं रह जाता
तू अज्ञात ही बनी रहना
ताकि दुनिया की हर बात लगे
कि तूने कही है
मुझे दृष्टि देने के लिए
मेरी कृति

जब मैं कृति से प्रकृति में लौटूंगा
यह दौर खत्म हो चुका होगा

तू मुझे वहीं बाग़ में मिलना
मेरी तितली
और दे देना अंतिम चिट्ठी
फिर भले उड़ जाना अनंत आकाश में

मैं चिट्ठी पढ़कर सो जाऊँगा ऐसा कि
उठूँगा तो नया दौर लाऊँगा
या नए दौर में जाऊँगा

उम्र नहीं, पूरा एक जीवन होता है प्रेम
बचपन होता है प्रेम।

एहसास

जब तू मुझसे बोलती नहीं
कविता रूठ जाती है
पता नहीं क्या मर्ज़ है?
हर कविता में तू
और तुझमें कविता नज़र आती है

तू ढक लेती है खुद को
तब भी
मैं कुछ और नहीं पड़ता

बंद कर लेता हूँ पलकें
तब भी
मैं कुछ और नहीं पड़ता।

ताकि सब कुछ बचा रहे

जब मुझे मौका मिलेगा
तब किताबें नहीं बाटूंगा
मैं बच्चों को
'जो लिखना चाहते हैं- कविता, कहानी या इतिहास'
कोरा कागज़ दूंगा

एक चित्रकार को दूंगा
खाली कैनवास

और एक तलाशशुदा व्यक्ति की ज़रूरत
कभी पूरी नहीं करूंगा
ऐसे हर तलाशमंद व्यक्तियों में बाटूंगा
ज़रूरत

जिससे रटी न जाएँ किताबें
ज़रूरतों को हासिल न कर लिया जाए

ताकि सब कुछ खत्म न हो
जीवन में क़ैद न हो जीवन
और ढेर सारा जीवन बचा रहे।

हार

लोग हैरान हो जाएंगे
जब रात की सुनसान वीरान गलियों में मुझे देखेंगे
कि देह मेरी है परछाईं तेरी

गली के सारे कुत्ते आँखें मींचे देखेंगे
पर भौंक नहीं पाएंगे
मौन हो जाएगा पंछियों का कलरव

बज उठेगी पृथ्वी धक धक

मैं लिखूँगा प्रेम को खेल
जब अंतिम पंक्ति में लिखूँगा
अलविदा मेरी दोस्त

मैं हार चूका होऊँगा जीवन
फिर तू जीत लेना ज़िंदगी
और जीना
एक और उम्र।

ख़ामोशी बोलती है- प्रेम

जब मैं बोलता हूँ वह चुप रहती है
जब वह बोलती है मैं चुप रहता हूँ

हम दोनों कभी नहीं बोलते
एक साथ

पर हो जाते हैं कभी कभी
एक साथ मौन
तब हमारे बीच का मौन बोलता है

फिर बिना किसी आवाज़ के ही
हम एक दूसरे को सुन लेते हैं
चुपचाप।

आहट

कोई दरवाज़े पे खड़ा है
कभी कभी
कमरे में बैठे बैठे महसूस करता हूँ

एक रोज़ तंग आकर, दरवाज़ा खोलता हूँ
'अब आज़ाद है परछाईं तेरी'
अपनी आहट से बोलता हूँ

फिर दरवाज़ा बंद कर भूल जाता हूँ
अपनी आवाज़
हर रोज़, दोहराता हूँ खुद को बार बार।

मैं गुज़र चुका सा हूँ

मुलाकात ने 'बंधन' दिया
बंधन ने 'रिश्ता'
हमारा प्रेम वह उन्मुक्त पंछी था
जो उड़ा नहीं

अकेलापन तुम्हारे साथ होने में भी था
जो तुमने कलाई पर 'रिश्ता' बाँधा
जी लिया मैंने

अब जो दोहराया तुमसे, तुमने कह दिया
कि 'तुम्हारे भीतर की तुम मेरे साथ हो,
मैं अकेला नहीं।'

मैं जो लिखता रहा शब्दों में बार बार
कि 'मेरे भीतर का मैं साथ हूँ तुम्हारे'
तुम जो मेरा तमाम लिखा पड़ बैठी हो
पता नहीं क्यों?
तुमने पड़ा भी या नहीं

एक बात और
मेरे भीतर का मैं जो तुम्हारे साथ है
तुमने मुझे तो कह दिया
'न जाने क्यों?, उसे कहा नहीं।'

शीर्षकहीन

तू अंजान बनती है
या मासूम है पता नहीं?
पिंजरा हाथ रखती है
और ख़्वाब आज़ाद रखती है

गुजारिश है
बहाने दे खुद को, या डूब जाने दे
सोख ले सूरज, या सूख जाने दे

उड़ने दे
कि आसमान अभी खाली है।

यात्रा

उसके घर से मेरे घर की दूरी
मेरी दो कविताओं के बीच के समय अंतराल के
बराबर है
उसके घर से उड़कर आते हैं शब्द

शब्द जिन्हें मैं लिखता हूँ
दरअसल, वे मुझे लिखते हैं

वे लिखते हैं की असल में
मैं वह नहीं जो मैं हूँ
मैं वह हूँ जो वे लिखते हैं।

घटना

तुम्हें याद है रेल का वह सफ़र
तुम स्टेशन पर खड़ी थीं
और रेलगाड़ी के गेट पर खड़ा मैं
धीरे धीरे तुमसे दूर जा रहा था

असल में वह दूर जाना
दूर जाना नहीं था
क़रीब आना था

उस यात्रा के बाद मैंने खुद को खो दिया है
और तुम्हें भी कहाँ पाया है

हमारे अलावा वहाँ एक तीसरा व्यक्ति था
जो लिख रहा था प्रेम कहानी
उसकी कल्पना में मेरे हिस्से विक्षोह था
सो उसने लिख दिया

जैसे जैसे रेलगाड़ी बढ़ती गई
तुम मुझमें समाती गईं
जब में रेलगाड़ी से उतरा
मैं, अब मैं नहीं था।

चित्रकार

रंगों के डब्बे में हरा रंग खत्म हो गया
कैनवास पर बस उसी की कमी थी

कुछ अंश हथेली में चिपका देख
कैनवास पर रगड़ डाली हथेली
ऐसे की
रगड़न की गर्मी से
खून बह उठा
उसने दर्द से छिटक दी हथेली

जहाँ भी खून गिरा
वहाँ हरियाली पनपी पौधों के रूप में
इस तरह कैनवास हो गया– पृथ्वी।

प्रेमी

ज़िंदगी का अध्याय अभी शुरू होना बाकी था
अन्दर की बैचेनी से
उसे लगा
खून में घुली प्रेयसी की यादें
बह जायेंगी
और वह पा सकेगा सुकून
इसीलिए, काट बैठा अपने हाथों अपनी ही कलाई

वह अनविज्ञ था
कि प्रेम में भटकाव मज़ा है
और पा लेना हार

उसे थोड़ा धैर्य होता
तो वह जान पाता
कि उसके लिए एक संदेस आया है।

राज़ की बात

तेरे पहले संबोधन से पहले ही
मैंने अपने सपनों का संसार रच लिया
दुनिया की तमाम अमर प्रेमकथाओं के नायक
मुझमें समा गए

परत दर परत तू गहराती गई
इतनी की उम्र बीत जायेगी
उन परतों को हटाने में

अब की कोई और आवाज़
मेरे कानों को सुनाई नहीं देती
तो तू ख़ामोश है

तब भी न बोलती वह एक शब्द
जिसने लिख दिया अंत

दरअसल, कहानी उसी अंत से उपजी है
मेरे प्रेम की!

विद्रोह

मुझे कभी कभी आसमान
हरा नज़र आता है

और पृथ्वी वह भी
हरी भरी ही नज़र आती है

दुनिया भर के तमाम चेहरे
हरे भरे हो जाते हैं
कभी कभी

मैं उत्सव मनाता हूँ
उस वक़्त
जो अपने चेहरे को रंगीन देखता हूँ।

तेरा इंतज़ार

तुझसे दूर जाने की कोशिश में
मैंने खुद से
संवाद करना छोड़ दिया

अब शब्द तो हैं पर
कोई पैमाना ठीक नहीं बैठता
नहीं बनती कविता

सोचता हूँ कविता बन भी गई तो क्या ?
नई कविता की फ़िराक में
शब्दों से फिर खेलने लग जाऊँगा
और तू हमेशा बनी रहेगी मेरा इंतज़ार

इस तरह मैं खुद को दोहराता रहूँगा
बार बार
मृत्यु, ज़िंदगी का इंतज़ार।

डर

कितना भयानक होता है वह मौन
जिसके पीछे छिपी होती है आवाज़

और वह समय कितना भयानक होता है
जब तू जानना चाहती है
मेरी उदासीनता का राज़

जानता हूँ कि तेरे अलावा कोई भी तो नहीं मेरा
मैं तुझे सब कुछ कहना चाहता हूँ
पर चुप रहता हूँ
कितनी भयानक होती है वह चुप्पी

ख़ामोशी कभी कभी भयानक चीख़ होती है

भयानक होता है
तुझे सामने देखकर अनदेखा कर देना
मान लेना की तू मेरी तलाश नहीं है

भयानक होते है वे रास्ते जिनका अंत नहीं होता
कुछ रिश्ते रास्ते होते हैं
जिन पर मैं चलता हूँ बेनाम

प्रेम कभी कभी भयानक रास्ता होता है।

मौन में बात

आवाजों में से संवाद चुराकर
कह देना अपना मौन
चुप्पी का एकालाप मत बुनना
मेरे लिए

मौन की अपनी एक भाषा है
दो दिलों के बीच में
जब निशब्द होता है तब
प्रेम होता है मौन

पक्षियों की देह और फरों के बीच
जब दबा होता है
तब उड़ान होता है
मौन

भीतर से ही, दबे हुए
आकाश छू लेने का सपना देख लेता है
जब मैं नज़रे उठता हूँ
आसमान की और
तब रंगीन बादल होता है
मौन

जब तुम मुझे सुनना चाहो
तो मेरे मौन को सुन लेना
अक्सर
मेरी आवाज़ होता है
मौन।

एक दोपहर का एहसास

वह कोई परी थी
जिसने मुझसे प्रेम किया था
चाहे एक दोपहर के लिए ही सही

उस दोपहर
मुझे एहसास हुआ
उस फूल सा होने का
जो सिर्फ पतझड़ में ही खिलता है।

फ़ासला

ठीक तुम्हारे पीछे मैंने देखा
तुम खड़ी हो
कोई और नहीं देख पाया
जो मैंने देखा

मैं किसी से कहता नहीं
पर जानता हूँ
ठीक तुम्हारे पीछे की परछाईं को

सच कहूं तो मैं तुम्हें
प्यार नहीं करता
वह जो ठीक तुम्हारे पीछे खड़ी है
वह कभी कभी तुमसी लगती है
मैं तुम्हें प्यार कर बैठता हूँ
ठीक तुम्हारे पीछे

एक दिन जब मैं
ठीक तुम्हारे पीछे चल रहा था
याद है तुम नाराज़ हुई थी
तुम्हें लगा कि मैं तुम्हारा पीछा कर रहा हूँ
दरअसल, मैं उसके साथ था
जो ठीक तुम्हारे पीछे थी

आगे चल चलकर ऊब गया हूँ
इसलिए अक्सर कहता हूँ
मैं चलूँगा
ठीक तुम्हारे पीछे

और तुम जान भी न पाओगी
ठीक तुम्हारे पीछे चलकर
मैं तुम्हारे साथ चलूँगा
...ठीक तुम्हारे पीछे।

साथी... सुनो न!

साथी... सुनो न!
अब थोड़ा ठहर जाते हैं

दो बातें कर लें
जो भी तुम्हें कहना था कह डालो
कुछ मेरी भी सुनना
फिर, शामिल हो जाएंगे दुनिया में
दौड़ कहाँ ठहरती है

देखो, हमारे पाँव के निशान कह रहे हैं
साथी... सुनो न!
अब थोड़ा ठहर जाते हैं
हम पिछड़ेंगे नहीं आगे निकल जायेंगे।

सच

अचानक से मेरा मन हो उठा
कि ज़ोर ज़ोर से रो लूं
अब लोग मुझसे
मेरे हिस्से का एकांत छीन रहे हैं

फिर लगा, जोर से चीखूं और घोषणा कर दूं
दुनिया का कोई भी व्यक्ति
मेरे सन्दर्भ में कुछ भी सोचने के लिए आज़ाद है
मुझे फ़र्क नहीं पड़ता

मुझे फ़र्क नहीं पड़ता की मुर्दों में गिना जाऊँ
या इंसान ही न कहलाऊँ

अब मैं छलावों के पार की दुनिया में रहता हूँ
तुझमे नहीं रहता
मौन में रहता हूँ

ज़िंदगी अब मुझसे आज़ाद है
मैं आसमान में रहता हूँ।

मासूम

एक उड़ती उड़ती ख़बर आई
कि एक लड़के की मौत हो गई
सफ़र में

सुनने में आया है
कि जिसके प्रेम में पागल होकर
उसने खुदखुशी की
वह जानती ही नहीं प्रेम

बेबकूफ
खुद को बंजारा कहता था।

दो राहें

मैं चाहता हूँ, एक भूलभुलैया हो
कितना अच्छा हो
मैं और तुम जीवन भर उसमें
भटकें, भूलें और खो जाएँ

भूलभुलैया की चुप्पी में
कही क़ैद हो जाएँ– आवाज़ें
कितना अच्छा हो जो
मौन हमारा प्रेम हो जाए

एक पथ पर तुम चलती हो
एक राह मेरी भी है
कितना अच्छा हो अगर
ये दो राहें मिल जाएँ

मैं और तुम जीवन भर उसमें
भटकें, भूलें और खो जाएँ।

आवाज़

कभी कभी तू खुशनुमा माहौल होती है
जब बौछार होती है
जब बरसात होती है

यह कहानी नहीं सच है मेरा
की मैं ऐसा बंजारा
घर से जो कभी निकला ही नहीं
मैं भीगा ही नहीं।

हठी

वह हमेशा मेरी बातों में उलझ जाती है
मैंने कहा था उसे
मैं एक पहेली हूँ

वह खुद जो मेरा उत्तर है
ढूँढ रही है दुनिया में
मेरी प्रेमिका का नाम

वह ज़िद पे अड़ गई है
खोज कर रहेगी पहेली का उत्तर
चलो अच्छा है
इस बहाने वह खुद को भी जान जाएगी।

दो नकाबपोश

काश...! मुझे कोई समझे
पर किसी सिद्धांत की तरह नहीं
जज़्बात की तरह

मैंने जब उसकी बेबसी पर कहा–
'मैं समझ सकता हूँ।'
वह कहती है... 'काश समझ पाते
कोई नहीं समझ सकता'

सच ही तो कहती है
मैं जिसे प्रेम समझता रहा
वो एक बेनाम रिश्ता है हमारे बीच
पर मैं उलझन में हूँ

प्रेम के अलावा भी
क्या कोई बेनाम रिश्ता होता है?
और अगर एक डोर हमें बांधती है
तो क्यों हम एक दूसरे को समझ नहीं पाते?

मुझे लगता है कि मैंने
नक़ाब ओढ़ा है
पर वह भी है एक नकाबपोश।

त्रासदी

मैं एक सपना देखता हूँ
कि
मैं प्रेम में हूँ
और
पहली बार देखता हूँ
की न्यूटन का तीसरा सिद्धांत फ़ेल हो गया।

ज़िंदगी बेबसी है या पागलपन

मैं कैसा खेल हूँ
जो न जीता जाएगा
न हारा जायेगा

होंठों की हलकी सी मुस्कराहट
प्रेम की दुनिया का सबसे बड़ा विध्वंस है
क्या फ़र्क पड़ता है
मुस्कुराया जाएगा

अब मैं उलझन हूँ, बेबसी हूँ, अकेलापन हूँ
अनंत तक जाने वाला रास्ता हूँ
क्या फ़र्क पड़ता है
रास्ता हूँ सो वीराना या दीवाना कहा जाएगा

पा लिया तो क्या पाया?
हार गया तो क्या हारा?
प्रेम खेल ही ऐसा है
जो न जीता जाएगा न हारा जाएगा
न खोया जाएगा न पाया जाएगा

प्रेम बेबसी हो या पागलपन
बस जिया जाएगा।

इश्क़

आज मैंने अपनी सीमाएं पार की
और अपने खेल के
सारे नियम तोड़ डाले

इस तरह एक नया खेल जन्मा
मेरा वह खेल पिंजरा हो गया
जिस में उलझकर
मैं खुद परिंदा हो गया।

मुलाक़ात

हम कल मिले, कल जिए
कल ही बिछड़ गए

आज छूट गया तेरे साथ
न जाने कहाँ ?
मैं आज में रहता हूँ।

अंत

कल रात मेरे सपनें में
तमाम चिट्ठियाँ आईं
मैंने उन्हें पढ़ते पढ़ते कई उम्र बिता दीं

आखिरी चिट्ठी में लिखा था
अब तुम्हारा इंतज़ार खत्म।

बदला

अब कुछ दिनों के लिए दूरियां
फिर लौटूंगा
अगर वक़्त की गोद में बचा रहा समय

और बची रही हिम्मत
नींद के आगोश से निकलने की

अगर मर गया तो जन्मूंगा तेरी गोद में
ताकि आगे आगे मैं भागूं
और तू हमेशा पीछा करती रहे
मेरा नाम पुकार कर।

साथ की बात

तुम अक्सर मेरे सपने सुनने
मेरे पास बैठी होती हो
सपने सच हैं
हमारा साथ बैठा होना झूठ

तुम्हारे झूठ मूठ के साथ बैठे होने से
मैं दुखी नहीं हूँ
क्योंकि 'कल्पना सच है
समूचा यथार्थ– झूठ'

यथार्थ में साथ होना भ्रम है
कल्पना में साथ होना– प्रेम
मेरा सोना झूठ है
सपने में तुम्हारा होना– सच

साथ की बात यह है
कि तुम्हारा अक्सर मेरे पास आना
सपने का प्रेम है हमसे
'अब हम एक हैं, एक सपना।

तुमने मुझे बस दूर से देखा है

एक दूसरे को हम उतना ही जानते हैं
जितना हमारी यादों में
रह जाते हैं– मुलाकातों के पल

मैं अपने हिस्से का पा रहा हूँ
जो खोता है
वह किसी और का हिस्सा होगा

मैं तुम्हें उससे ज्यादा जानता हूँ
जितना वे पल मुझे बताते हैं

वे महसूस करते हैं
तुमने मुझे बस दूर से देखा है।

मन

बन पंची मन विचरण को तरसे
नीले से इस अंबर में
महीन तीलियों से टकराकर
रह गया एक पिंजर में

छटा ये नीले अंबर की हर दम पंछी से कह जाती
ए पंछी तू बाहर निकल
विचरण कर ले इस अंबर में

दाना पानी पाता हर दिन
लेकिन उसको कुछ न भाता
विचरण करने को अंबर में, वह प्रतिक्षण छटपटाता

खुला फाटक पिंजर का पाकर
मन ही मन बहुत हर्षाया
पंख पसार उड़ा अंबर में
अपने जीवन का सुख पाया।

हम दीवाने

हम दीवाने हम दीवाने कहाँ हमारी हस्ती है
हम मतवाले हम मतवाले
कहाँ हमारी बस्ती है

संग हवा के आए हम
धूल उड़ाते जहाँ चले
सूखी पट्टी के संग हम, नाचते गाते जहाँ चले

पंख पासरे उड़े हैं अंबर, शाख़ पात से जहाँ चले
बनकर बब्बर शेर दहाड़े
जंगल जंगल जहाँ चले

ग़म का मंज़र न देखा
खुशी खुशी हम जहाँ चले
आवारा हैं आवारों की, बस्ती में मस्ती छोड़ चले।

पहली पहली बार

मैंने उसको देखा होगा
पहली पहली बार

कुछ पल वह मुस्काई होगी
कुछ पल वह लजाई होगी
एक पल तो अपने मन में, प्रीत आस जगाई होगी
पहली पहली बार

कुछ पल याद किया होगा
कुछ पल मुझको भूली होगी
एक पल तो अपने मन में, प्रीत आस जगाई होगी
पहली पहली बार

कुछ पल प्यार किया हमने
कुछ पल इज़हार किया हमने
एक पल में ही तो, प्यार की हस्ती मिटाई होगी
पहली पहली बार।

मैं कहाँ हूँ

वह कहती है... आप कहाँ हो ?
लगता है कह दूं उसे
जहाँ भी प्रेम लिखा है
वहाँ तू है
और उन दो अक्षरों की रिक्तता में, मैं हूँ

जब हम जी चुके होंगे जीवन
तब दो देह जलाई जाएँगी
तुम्हारी और मेरी
यमराज चौंक जाएगा जब उसे दो देह में
एक ही आत्मा मिलेगी
(एक साथ)
तब वह रजिस्टर में सिर्फ़ तुम्हारा नाम लिखेगा

तुम्हारे नाम के आगे कोष्टक बनाया जाएगा
जिसमें लिखा होगा
मेरी आत्मा का सच
(रिक्तता में)
कि वह तुम्हारी ही आत्मा में भीतर कहीं है

मैं तुम्हें क्या कहूं
कि मैं कहाँ हूँ?

दिशाहीन

बिना शब्दों के
क्या कोई कविता लिखी जा सकती है?
शायद मन में ही।

अब हर शब्द तेरा पर्याय है
मैं हैरत में हूँ!

कैसे लिख दी मैंने अपनी प्रेम कहानी
और कैसे ओढ़ा?
प्रेमी का लिबाज़।

दो बातें

बात एक ही है पर
दो बातें हैं
एक बात के इस पार
एक बात के उस पार

प्रेम एक ही है
और... प्रेम के इस पार भी प्रेम
उसपार भी प्रेम
प्रेम में कभी कोई नुकीला सिरा नहीं होता

साथ एक ही है पर
दो जीवन हैं
मैं जो हूँ, साथ के इस पार
तुम जो हो साथ के उस पार।

अधूरी बात

मैं उसे कभी कुछ नहीं कह पाया
वह बोली नहीं
और बात, अधूरी रह गई

इस बात से बेख़बर मैं मिला उसे
मुलाकात अधूरी रह गई

एक शिकायत लेकर मैं जीता रहा
एक वह
और एक शिकायत अधूरी रह गई

यह सिलसिला न रुका
न टला
न थमा
बरसात, कुछ कहकर चली गई।

यार बंजारे

(संजय शेफर्ड सर के लिए)

किताब एक ब्रह्माण्ड है
हर एक कहानी– एक दुनिया

बचपन में
जब भी मैं लुका छिपी खेला करता था
किताब का पन्ना पलटकर
उसमें घुस जाता था

मैं अपना जीवन शब्दों में तलाशता था
और शब्द अपना जीवन मुझमें
किताब के भीतर हम खेल रहे थे
लुका छिपी

जब मैं किताब से बाहर आया
सारे शब्द मेरे पीछे
किताब छोड़कर भाग आए

मेरे साथियों ने मुझसे पूछा
'कि तू कहाँ छिपा था?'
मैंने उन्हें पूरी कहानी सुनाई

वे भाग पड़े
और किताब के खाली पन्नों में घुस गए
अब मैं बड़ा हो गया हूँ
शब्द अब भी मेरे आस पास
पड़े रहते हैं- आज़ाद
मेरी तरह

मैं जब भी कोई किताब पड़ता हूँ
उसमें कई किरदार नज़र आते हैं
कुछ दफ्तरों में
कुछ काम में व्यस्त
वे किताब की कैद से आज़ाद होना चाहते हैं
वे बस जीना चाहते है

वे सब मुझे पहचानते हैं
कहते हैं
कि वे मेरे बचपन के दोस्त हैं

मैंने उन्हें कहा-
'घबराओ मत दोस्तों, हम अभी भी खेल रहे हैं'
तुम सब किताब में नहीं फंसे हो
तुम सब दुनिया में भी नहीं फंसे हो
'तुम सब, - दुनियादारी में फंसे हो।

अगर जीना है तो
वापस दुनिया में आओ
और, यार...बंजारे बन जाओ।